Economic Times (Hindi)

दूसरी तिमाही में कई फर्मों में छोटे निवेशकों ने घटाई हिस्सेदारी

वैश्विक और घरेलू आर्थिक हालात को देखते हुए सोना-चांदी और डेट उत्पादों में पैसा लगा रहे हैं निवेशक

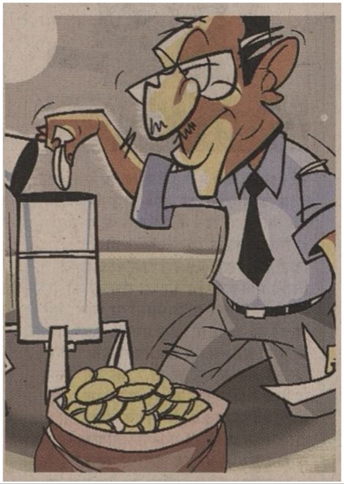

विजय गुरव
मुंबई

कई कंपनियों में रीटेल निवेशकों ने जुलाई से सितंबर के बीच अपनी हिस्सेदारी कम की है। वैश्विक अर्थव्यवस्था को लेकर तस्वीर साफ नहीं है। भारत में महंगाई और आर्थिक ग्रोथ सुस्त पड़ने की आशंका बनी हुई है। इस वजह से छोटे निवेशक बिकवाली कर रहे हैं। शेयर बाजार से पैसा निकालकर वे बॉन्ड और सोने-चांदी में लगा रहे हैं। उनका मानना है कि इनमें इक्विटी के मुकाबले कम जोखिम है।

एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज के मैनेजिंग डारेक्टर प्रकाश कचोलिया का कहना है, 'रीटेल ग्राहकों का भरोसा इक्विटी पर कम हुआ है। वे बाजार की चाल से आशंकित हैं।' जून तिमाही की तुलना में रीटेल निवेशकों ने कई प्रमुख कंपनियों में अपनी हिस्सेदारी 0.5 से 1.1 फीसदी तक कम की है। इनमें ट्रेंट, टाटा टेलीसर्विसेज, पेट्रोनेट एलएनजी, ब्रिटानिया, बॉम्बे डाईंग, वीआईपी और टेक महिंद्रा जैसी कंपनियां शामिल हैं।

कोटक सिक्योरिटीज में ब्रोकिंग डिवीजन के प्रमुख बी गोपकुमार का कहना है, 'पिछले 6-8 महीनों में बाजार में भारी उतार-चढ़ाव आया है। इस वजह से रीटेल निवेशक शेयर बाजार से दूर हो रहे हैं। इसकी एक वजह फिक्स्ड डिपॉजिट और नॉन-कनवर्टिबल डिबेंचर (एनसीडी) पर 9 से 12 फीसदी तक का रिटर्न मिलना भी है।' उन्होंने कहा कि अगर ब्याज दरों में कमी का दौर लौटता है तो शेयर बाजार में इन निवेशकों की वापसी हो सकती है।

सितंबर तिमाही के लिए जिन 136 कंपनियों ने शेयरहोल्डिंग के आंकड़े जारी किए हैं, उनमें 59 में रीटेल निवेशकों की हिस्सेदारी घटी है। छोटे निवेशकों ने 51 कंपनियों में हिस्सेदारी बढ़ाई है। 26 कंपनियों में उनकी शेयरहोल्डिंग में कोई बदलाव नहीं आया है। इनमें से कुछ कंपनियों जैसे मैकडॉवेल होल्डिंग्स और बॉम्बे डाईंग में प्रमोटरों ने हिस्सेदारी बढ़ाई है, जो मैनेजमेंट के कंपनी पर भरोसे को दिखाता है।

घटी शेयरहोल्डिंग

सितंबर तिमाही के लिए जिन 136 कंपनियों ने शेयरहोल्डिंग के आंकड़े जारी किए हैं, उनमें 59 में रीटेल निवेशकों की हिस्सेदारी घटी है। छोटे निवेशकों ने 51 कंपनियों में हिस्सेदारी बढ़ाई है

कचोलिया का कहना है कि यूरोपीय कर्ज संकट और अमेरिका में कमजोर आर्थिक ग्रोथ से दुनिया भर के शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव हो रहा है। ऐसे में छोटे निवेशक डेट, सोना और चांदी जैसे सुरक्षित माने जाने वाले एसेट में पैसा लगा रहे हैं। प्रभुदास लीलाधर की ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर अमीषा वोरा का कहना है, 'सोना या रियल एस्टेट जैसे पारंपरिक एसेट की तुलना में शेयर बाजार का प्रदर्शन काफी कमजोर रहा है। इसके चलते रीटेल निवेशक बाजार से निकल रहे हैं।'

हालांकि, ब्रोकरों का कहना है कि छोटे निवेशकों को जल्दबाजी में शेयर नहीं बेचने चाहिए। गोपकुमार का मानना है कि अगले छह महीनों तक बेंचमार्क सेंसेक्स 16,000-19,000 के बीच रह सकता है। वह निवेशकों को चुनिंदा शेयरों में खरीदारी की सलाह दे रहे हैं। उनका कहना है कि निवेशक बैंक, एफएमसीजी और कुछ चुने हुए आईटी कंपनियों में पैसा लगा सकते हैं। सितंबर तिमाही में सेंसेक्स में करीब 13 फीसदी की गिरावट आई। बुधवार को सूचकांक 16,958 अंक पर बंद हुआ। वॉल्यूम में भी भारी गिरावट आई है। इससे ब्रोकरों को भी आमदनी घटने की चिंता सता रही है।